उसने सब सही

(कविता संग्रह)

- माँ ऋतेश्वरी

उसने सब सही

(कविता संग्रह)

- माँ ऋतेश्वरी

Usne Sab Sahi

A Collection of Hindi Poems

by Ma Ruteshwari [Purnaben P. Pandya]

ISBN No. 978-93-342-6912-3

(C) Maa Ruteshwari

Price : in India Rs. 180/-, Abroad US$ 3/-

First Adition : 2025

Publisher : Pandya Purnaben (Ma Ruteshwari)
Shree Maa Ruteshwari Nikunj Ashram
Samana Road, Opp, Dhorivav, Near Madhav Petrol Pump,
Dadia 361012, Dist : Jamnagar, Bharat
Mo No : + 91 94264 53953
Email : - maruteshwari.mahayog@gmail.com

Printer & Computerised :
'Sagar' Ramolia, Jamnagar
Mo. 9998971823

The views expressed in this book are the author's own and have been verified to the extent possible. This book is sold subject to the condition that it shall not, by way of trade or otherwise, be lent or resold. hired out, or otherwise circulated without the publisher's prior written consent in any form of binding or cover other than that in which it is published and without a similar condition including this condition being imposed on the subsequent purchaser and without limiting the rights under copyright reserved above, no part of this publication may be reproduced, stored in or introduced into a retrieval system, or transmitted in any form or by any means (electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise), without the prior written permission of both the copyright owner and the abovementioned publisher of this book.

INDEX

No.	नाम	PgNo
01.	तुझे कृष्ण कहूँ...	07
02.	मेरा राग भी तू है...	07
03.	स्वर ही ईश्वर है...	08
04.	मेघा गरजे...	08
05.	अजहु ना बाजे...	09
06.	आज सुनने की जीद...	09
07.	तेरी घूनें...	10
08.	मैं ने बाली उम्र में....	10
09.	तेरी सुरीली...	11
10.	सीली सीली तन्हाँ रातों में...	11
11.	मेरी साँस भी...	12
12.	इन्तज़ार...	12
13.	राधा की मुस्कान...	13
14.	ये नयना हरे भरे...	13
15.	आशिष...	14
16.	मन बाँसुरी...	15
17.	गुरुवर...	15
18.	मैं चली...	16
19.	सुणो ओ सजना...	16
20.	मैया की शरन...	17
21.	ओ बंसीवाले...	17
22.	भज मन...	18
23.	फिर छेडी राग...	18
24.	कलाकार कैं और है...	19
25.	आज मेरी बगियाँ मे...	19
26.	रागों का सागर...	20
27.	गोकुल पधारो श्याम...	21
28.	अकेली हूँ...	21
29.	भँवरे डोले...	22
30.	गुरु प्रार्थना...	22
31.	याद आवे...	23
32.	मोहना...	24
33.	हे आद्या...!	24
34.	गाओ मन मेरा...	25
35.	मीसरी खिलाऊँ...	26
36.	चलते चलते...	26
37.	धून संवारी...	27
38.	बनवारी...	28
39.	ओ मनवा...	28
40.	प्रभु की शरण में...	29
4१.	दिल रुमझुम करे...	29
42.	अखिल ब्रह्मांड में...	30
43.	धन्य भाग...	31
44.	मन की बिना...	31
45.	अवतर्या राधा...	32
46.	अणु अणु में...	32
47.	गुरुदेव की किरपा...	33
48.	देवताओं...!	33
49.	संत कृपा...	34
50.	कृपा सिन्धु...	35
51.	हे गोपाल...	35
52.	ये तप और...	36
53.	खाली खाली तन तम्बूरी...	36
54.	महायोग के दाता...	37
55.	गाती हो मेरी जिन्दगी...	37
56.	गुरुजी तुम गंगा...	38
57.	गुरुजी आशिष देना...	39
58.	सही नमाज है...	39
59.	आज सूरज...	40
60.	गा रे मुरलिया...	40
61.	माधव कैसे भूलेंगे...	41
62.	जाउँ तो जाउँ किस धाम...	41
63.	दिल की किताब...	42
64.	वीर...	42
65.	धून...	43
66.	धून के संग...	43
67.	तेरी धूनें सुनते...	44
68.	छू लेती...	44
69.	इठलाती...	45
70.	अगर मेरे आँसू ...	45
71.	जीया तौसे?...	46
72.	मैंने बाली उमर में...	46
73.	आज खेलन की...	47
74.	जानु तो जानु...	47
75.	गाया है प्रेम का नगमा...	48
76.	गुंज उठी...	48
77.	चैन ले गयो जी...	49
78.	साँस ही इश्वर है...	50
79.	मथुरा की बाट चली...	51
80.	बाग की खुशबू ...	52

मनोगत

तू संबंधों का अमृत कुंभ बहा दे ।
तब ही संवादित गुल सुगंध बहा देगा ।।
'अहम' का उड़ जावे जो छेद निःशेष ।
तब परम की परख हो जाय विशेष ।।

समाधि भाषा में जब काव्य प्रसून होता है, तब मेरी समझ यही है कि कुंडलिनी शक्ति यही ही तो श्री भगवान कृष्ण की अभिन्न, अविभाज्य चित् शक्ति-वही ही राधा शक्ति है। जब वह भक्त के हृदय में जागृत हो जाती है, तब वह राधा शक्ति साधक को आनंद सागर में निमज्ज कर देती है । राधा का मायना है प्रेम की धारा, भक्त की अनवरत धारा (राधा)। यह राधा शक्ति संपूर्ण शक्ति है। और श्री कृष्ण परमात्मा पूर्ण शक्तिमान है। दोनों में अंश मात्र भेद नहीं है। क्योंकि सहस्रार से यह धारा निम्न मुख करके बहती है। तब ही तो सर्ग प्रक्रिया शुरू होती है। याने के जगत की उत्पत्ति होती है।

परंतु जब सद्गुरु कृपा -अनुग्रह होता है, तब यही ही शक्ति उर्ध्वगामी हो के बहती है, तब राधा - जागृत राधा का स्वरूप परमात्मा स्वरुप श्री कृष्ण भगवान को आलिंगन देके वह स्वरूप में एकाकार हुए बिना शांत नहीं होती, अर्थात कोई भी साधना का नतीजा-सार यही है की धारा

(प्रवाह) का रूपांतर राधा में हो जाता है।

जब यह राधा-कृष्ण के मिलन में आनंद की चरम सीमा अतिक्रमी योगीजन अमृत रस में तरबतर हो जाता है, यह अनुभूतिजन्य आनंद अव्याख्येय है। यह आनंद स्वरूप ही अपरोक्षानुभूति - निर्विकल्प समाधि की अनुभूति है। अर्थात ब्रह्मतदाकार वृत्ति की प्राप्ति है। तो इस अनुभूति को में यूं ही कहूंगी कि,

ऋते लोग कहे, मतवाली चली ।
वह तो चली अलगारी बनी ।
चली मैं तो चली पिया की गली ।।
(का.नं. 15)

मेरा सूत्र है कि परम विरह ही परम प्रेम है तथा परम प्रेम ही परम विरह है, यही ही सही त्यागवृत्ति है। 'प्रेम दिव्य है राग अंध है।'

यह बात जिंदगी में, अनुभव में आ जाए तो जीव-शिव का (राधा-कृष्ण का) मधुर अद्वैत हो जाता है।

इसी काव्य संग्रह में मैं अपनी अनुभूति के साथ यह जताना चाहती हूं कि भक्ति में भक्त को अपने आराध्य भगवान का विरह लगता है, वैसे ही भगवान को भी भक्त का विरह सताता है।

जैसे-

आज सूरज निकल आया
मेरे दिल के कोने में,
देखा तो मेरी बगिया में वो कली
धीरे से मुस्कुराकर खिली,
भले हो पास मेरे पांचजन्य,
पर प्रयति में उसने सब सही।
(का.नं. 58)

राधाष्टमी, २०२४ माँ ऋतेश्वरी

01. तुझे कृष्ण कहूँ...

तुझे कृष्ण कहूँ या कान्हा..
मेरा बंसी बजैया...
तूं है जग का तारण हारा.... तुझे कृष्ण....

रण संग्राम में तूं गीता गाता ...(2)
सारथी बन के अर्जुन के ओ मीत...(2)
तुझ पे मैं बली बली जाऊँ...(2)
तूं है जग का पालन हारा...(2)

सत्य, धर्म की धजा फहराता.
सखा बन के सखी की...(2)
लाज राखन हारा, कामणगारा...(2)
तूं, ऋता जगका कारणहारा...(2)

02. मेरा राग भी तू है...

मेरा राग भी तू है, विराग भी तू है।
मेरी बगियां में जो खिले है फूल, वो तूम्ही ही तो हो.

अन्तर मेरा नील गगन है,
इसमें चमकते चाँद और तारें, इसकी चमक तो तूं ही तो हो...(2)
प्यारी ही मेरा सागर तरणी..(2), तेरी शरण की गङ्गा जल हूँ,
चरणोंदक की बुन्द बुन्द हूँ मैं..(2)

ऋता की तो इक ही तमन्ना है....(2)
हर सांस में रहो संहिता बनके....(2)
जागीर भी मेरी, शरण तेरी है...(2)
हर धड़कन में तूं ही.. तूं ही तो हो...(2)
मेरा राग भी तूं है, मेरा विराग भी तूं है।

03. स्वर ही ईश्वर है...

स्वर ही ईश्वर है हमारे लिए..(2)
सूर ही शिव है तो गौरी लय है..(2) हमारे लिए स्वर ही ईश्वर है।

पूजा भी स्वर है, ज्ञान ज्योत ही स्वर है,
हमारे लिए स्वर ही ईश्वर है।

ब्रह्मा,विष्णु,महेश हर साँस जपते है।(2) हमारे लिए स्वर ही ईश्वर है।

स्वर ही आदि, मध्य और अन्त है।..(2)
सो स्वर ही ईश्वर है।..(2) हमारे लिए स्वर ही ईश्वर है।
स्वर ज्ञान है और स्वर ही विज्ञान है..(2)
स्वर ही विभु, प्रभु अणुं अणुं में..(2)
हमारे लिए स्वर ही ईश्वर है। ऋता के लिए स्वर ही ईश्वर है।

04. मेघा गरजे...

घन घनन घनन (2) मेघा बरसे गरजे..(2)
मेरी गगन गुफ़ा में मेघा गरजे...घन घनन...

दमक दमक दम दामिनी दमके..(2)
मेरी भंवर गुफ़ा में दामिनी दमके..(2) घन घनन...

टप टपक टपक टप बिन्दु बरसे ..(2)
मधुबिन्दु आकाशी चाँद बरसे ..(2) घन घनन...

मघु बिन्दु चखके मलके ऋता..(2)
चेतन सागर में हुल्लसे।..(2) घन घनन...

05. अजहु ना बाजे...

अजहु ना बाजे... बाँसुरिया...(2)
जीवन मेरा बीता जाये रे...(2) हाय, अजहु...
श्याम अब तो दरश दिखा जा...(2)
कान्हा अजहु ना बाजे बाँसुरिया...(2)
रात दिन मेरे बितत है, जैसे पतझर की पत्तियाँ...(2) अजहु ना...

मेरी आश निराश ना होवे...(2)
हे क्हान ! अब तो दरश दिखा जा...(2) अजहु ना...

मिलन मदिरा नैनों में छाईं...(2)
जैसे नदियाँ की अविरत धारा...(2) अजहु ना...

मेरे प्राण, श्याम ही तो श्याम है...(2)
अब तो, ऋता दरश दिवानी... अजहु ना...

06. आज सुनने की जीद...

आज सुनने की जीद है हमारी (2)
इस चरनन में बैठे रहेंगे..(2) आज सुनने...
मर जायेंगे मीट जायेंगे, तेरे सूर को सुने बीना..(2) आज सुनने...

जरा सोचो तो तुम (2)
सूर को सुने बीना जीद नहीं छोडेंगे!!(2) आज सुनने ...

छोड दो, वैंकुन्ठ नंदलाला (2) अब तो गोकुल पधारो..(2)
जीद हम नहीं छोडेंगे..(2) आज सुनने...

गीता में गाया वचन!! (2) सचकर दिखलाओ..(2)
जीद हम नहीं छोडेंगे!!(2) आज सुनने..

07. तेरी घूनें...

तेरी घूनें सुनते सुनते हम हो गये दिवानें...(2)
तेरा राग सुनते सुनते हम हो गये हैं पागल...(2) तेरी घूनें ...
तूम ले गये हो अपने सङ्ग दिल भी हमारा...(2) तेरी घूनें ...
मन है कि इसमें बस गई बाँसुरी की रङ्गी धूनें...(2) तेरी घूनें ...
कुछ नज़र नहीं आता...(2)
घरबार छोड दिया हमने...(2) तेरी घूनें ...
ईस संसार में ना को´डर है...(2)
अब तो आनन्द ही आनन्द है...(2) तेरी घूनें ...
तूम ले गये हो अपने सङ्ग...(2)
प्राण भी.. हमारे...(2) तेरी घूनें ...
सुनके ऋता की पुकार...(2)
शरण में ले..लो मुझे...(2) तेरी घूनें ...
जो तुम ना आ सको तो..(2)
मुझको बुला लो अपने सङ्ग...(2) तेरी घूनें ...

08. मैं ने बाली उम्र में...

मैंने बाली उम्र में
पिया था प्याला प्रेम का...(2)
मेरा ईश्क बन गया सुफियाना...सुफियाना... मैंने...
मेरी साँस की जागीर, बन गई आशिकी...(2)
मेरी दिल की धड़कन ईश्क के हकीक़ी बन गई...

मेरा ईश्क़ बन गया अणु अणु,
हर साँस सुफियाना...सुफियाना...
प्रेमल सुफियाना...(2) मैं ने...

09. तेरी सुरीली...

तेरी सुरीली बँसी ने मारी कटारी...(2)
तेरी अदाओं ने कर दिया धायल...(2)
फिर पूछते हो, क्या हो गया है?...(2) तेरी सुरीली...

नींद भी पंछी बनके, नयन द्वार से ऊड़ गई...(2)
प्रेम प्याला पी के हम तो हो गये है पागल...(2)
फिर पूछते हो... क्या हो गया है...?(2) तेरी सुरीली...

नयन द्वार मेरा खुल्ला है... पलक दन्डी भी साफ है...(2)
फिर भी तशरिफ क्यों नहीं लाते?(2)
और पूछते हो... क्या हो गया...?(2) तेरी सुरीली.

पागल का गल ऋता! उसकी अदाएं ले गया...
ये रङ्गी फिझाएं पुकारती...(2)
फिर पूछते हो... क्या हो गया है...?(2) तेरी सुरीली...

10. सीली सीली तन्हाँ रातों में...

सीली सीली तन्हाँ रातों में...(2)
यादों की पून्जी लेके मैं तो रोती रही...।(2) सीली...

तन्हाँ तम्बूर भी गुन्गा हो गया है...(2)
रागों की जागीर ले के मैं तो रोती रही...।(2) सीली...

हवा भी रुक गई रवा हो गया दिल...(२)
ऋते! वादा तो भूले पर हमें भी भूल गये...।(2) सीली...

11. मेरी साँस भी...

मेरी साँस भी तूम हो, मेरी जागीर भी तूम हो...(2)
इस प्रीत के महल में, ओर न दूजा कोई,
बस मैं और तूम हो...(2) मेरी साँस...

न पूजा हो ना चर्या हो, कृपा से जीवन मम सफल हो...(2)
इस प्रीत के महल में ओर न दूजा कोई हो,
बस मैं ओर तूम हो...(2) मेरी साँस...

मैं झलील हूँ, तूम अबीर हो, मैं सेवक हूँ, तूम स्वामी हो...(2)
ऋता के प्रीत महल में ओर न दूजा कोई हो...
बस दो तन इक नूर हो...(2) मेरी साँस...

मैं महोबत, तू मुख़तार मेरा, बीन अऱज काम होवे तमाम...(2)
श्याम! प्रीत के महल में, ओर न दूजा कोई हो...
बस मैं ओर तूम हो...(2) मेरी साँस...

12. इन्तज़ार...

एक हृदय को तेरा इन्तज़ार है...(2)
कहाँ कहाँ ढूंढू मैं तुझे...।(2)
ईधर ढूंढू या उधर ढूंढू...(2) तू तो सब में समाया हो...।(2) एक...

जल थल या नभ में ढूंढू...(2)
सब के सब तू ही तो हैं...।(2) एक...
ऋतेश्वरी के तुम तो स्वामी...(2) तू तो अन्तरयामी!!!। एक...

हर स्वास स्वास में ही...(2) तेरा ही तो बसेरा हैं...।(2) एक...

13. राधा की मुस्कान...

राधा की मुस्कान में कान है...(2)
दिल में गोकुल व्रज धाम है...। राधा की...

मेरा वृन्दावन सुन्दर गाँव है...(2)
वैकुन्ठ नहीं आना,यहाँ सुन्दर काम है...। राधा की...

रढियाली रात रास का रुडा स्थान है...(2)
रस काजे शिव से जीव का ख्याल है...। राधा की...

लुपाछुपी खेलते सब काल में...(2)
नरनारी रूपे इक इक गोपी ओर क्हान...। राधा की...

ऋते! रूपला जगत् इसका नाम है...(2)
अणु अणु में रमता वही तो राम है...। राधा की...

14. ये नयना हरे भरे...

ये नयना हरे भर...(2)
ये चरन गङगा जल से भरे भरे...(2)
जरा डूबकी लगाने दो मुझे...(2)
कल की ना ख़बर जानु, मुझे रहने दो अपनी शरन में... ये नयना...

पाप पुण्य रख दिया इन चरनन में...(2)
कौन है तुझसे पतित पावन? कोई ओर जाने ना... ये नयना...
तेरे प्यार में है हर खुशी...(2)
देती है खुश्बू चिदानन्द की, नैना मिलावुं प्यार में तेरे डुबू... ये नयना...

15. आशिष...

आज आशिष मिली सद्गुरु की...(2)
यूं कहो सूरज निकला अंधेरे में...।(2) आज...

अंधेरा जनम जनम का चला गया...(2)
बिखर गई चाँदनी चहूँ ओर...।(2) आज...

आज पानी में कमल मुस्कुरा रहा...(2)
निर्लेप की सुगन्ध फैला रहा है...।(2) आज...

कृपा से जीवन बाग़ खिला...(2)
रातरानी की सुरभि फैल रही...।(2) आज...

भितर बाहर एक ही गुन्ज...
मेरो श्याम श्याम...(2)
मन मुरली भी जपत वो ही मेरो श्याम...।(2) आज...

ना कुछ लेना ना कुछ देना...(2)
श्याम श्याम जपते रहो ऋते!!।(2) आज...

रहो होंश में मगन अपने में...(2)
चिदानन्द रूपो शिवोडहं शिवोडहं...।(2) आज...

16. मन बाँसुरी...

ओ मेरी मन बाँसुरी!(2) ओ मेरी जीवन सङ्गिनी...(2)
तुझ पे दिल महरबाँ है...।(2) ओ मेरी...

तू ही मेरी रीगिनी हो...(2)
तू मेरी मङ्गलमयी आरझू हो...।(2) ओ मेरी...

तू मेरे काह्न की निशानी हो...(2)
तू मेरे श्याम की माधुरी हो आरझू हो...।(2) ओ मेरी...

तू अब तो सुना दें शिवरन्जनी...(2)
मिला दें श्याम से ओ नन्दिनी...।(2) मेरी है आरझू...(2) ओ मेरी...

तू ऋता की जीवीनदात्रि...(2)
तू ही मेरे मनकी नाजनी हो...।(2) ओ मेरी...

17. गुरुवर...

हे गुरुवर राखो लाज हमारी...(2)
धरी धरी पल पल किरपा बरसत तुमरी...(2)
मैं बोरी समझ न पाईं...।(2) गुरुवर...

धरी घरी पल पल माया रङ्ग बदलती है...(2)
यह अजब माया से पार करो...।(2) गुरुवर...

संसार सागर से धरी घरी पल पल...(2)
नाही बिसरत ऐसी तारी लगाईं...(2)
ऋता को ऐसी तारी लगाईं...।(2) गुरुवर...

18. मैं चली...

मैं चली... पिया की गली...(2)
चली चली मैं पिया की गली... मैं चली...

झीलमील सितारों में छूपके चली...(2)
पिया की गली... मैं तो चली...

चाँद सूरज को साथ ले के चली...(२)
मेघधनु का रङग ले के चली... पिया की गली मैं तो चली...

निहारिका में छूप छूप के चली...(2)
आकाशगङगा से छूप के चली... पिया की गली मैं तो चली...

वितान चुनरी ओढ के चली...(2)
साँवरे की बंसी ले के चली... पिया की गली मैं तो चली...

लोग कहे मतवाली चली...(2)
मैं तो चली बन के अलगारी... पिया की गली मैं तो चली...

19. सुणो ओ सजना...

सुणो सुणो ओ सजना! मेरे अन्तर नाद को सुणो।(2)

कोई नहीं इस जग में तेरे जैसा सुणनहारा...(2)
तेरी सब लीला न्यारी न्यारी, बँसी तेरी प्यारी प्यारी...।(2) सुणो...

सात छेद वाली सुनते ही, हो गई दिवानी तेरी...
चेतन अनाहत की बेहद तारी... निकुन्ज की फुलवारी...।(2) सुणो...

20. मैया की शरन...

मैया ओ मेरी मैया जगन्मैया...(2)
मैं आई शरन तेरे द्वार...।(2)

दुनिया कुछ भी कहै ओर कहेती रहै...(2)
मेरे माथे पे तेरी आशिष रहे...।(2) मैया...
छोड कर आई सारा संसार...(2)
लिपट गई तेरे दरबार...(2)
मेरे माथे पे तेरी अमीधारा बहे...।(2) मैया...

हिमालय सा है यै चढाण...(2)
गङगा का कल कल निनाद...(2)
मेरे माथे पे गूंजता रहे...।(2) मैया... ऋता के...

21. ओ बंसीवाले...

ओ बंसीवाले... तेरी अखियों में जादु है...(2)

कभी अखियाँ मिलाते तो कभी धून सुनाते..
ओर हम धायल हो जाते है...।(2) ओ बंसी...
कभी मिसरी चुराता, कभी मटकी फोडता है...(2)
चिर हर के भेद मिटाता तू...।(2) ओ बंसी...

ऋते, उनकी अखियों में जादु है...(2)
हम ऊँनके हाथों में प्यादु है...(2)
गीता गा के भ्रम भगाता है...।(2) ओ बंसी...

22. भज मन...

भज मन गोविंदा गोपाला...(2)
मुरली मुकुट धारी गो..पाला...(2) भज मन...

रास रचैया गोपीजन वल्लभ...(2)
राधा का प्यारा न्यारा गोविंदा...।(2) भज मन...

जगत् उध्धारक धर्म संस्थापक...(२)
गोपियों का प्यार दुलारा...।(2) भज मन...

गीता गवैया सुदरशन धारी...(2)
संशय सागर से उध्धारक...।(2) भज मन...

सुरनर मुनि के हे अंतर स्वामी...(2)
ऋता का है तू अंतरयामी...।(2) भज मन...

23. फिर छेडी राग...

फिर छेडी राग मेरे वियोग की...(2)
साथ साथ मेरी जिन्दगी की बात...
साथ साथ मेरी ग़झल का राज...।(2) फिर छेड़ी...

क्या है मेरी बात का राज?
क्या भावों की है ये बाराती!!...।(2) फिर छेडी...

क्या थी ये वादियाँ...
और क्या थी फिझाओं में मेरी रात...।(2) फिर छेडी...

फिर क्यों छेडी राग मेरी,
ऋता के विरह की बात...।(2) फिर छेडी...

24. कलाकार कैं और है...

आँख भले खुले ना खुले सखी मेरी...(2)
पर सपन देखने की मझा कुछ और है...।(2) आँख...

सुनने को न कोई तैयार व्यथा तेरी...(2)
पर, दिलबर! तेरी रमण कथा कुछ और है...।(2) आँख...

अरजी बीना हो गई मैं उसीकी दरवान...(2)
मानना ही पडेगा किरदार की कला कुछ और है...।(2) आँख...

हयाती डगर पथ बहोत लम्बा लचक...(2)
पर हृदय का हुल्लासदार कुछ और है...।(2) आँख...

श्रध्धा किस्ती में जरा सा होवे छेद...(2)
ऋते परीक्षक, कलाकार कुछ और है...।(2) आँख...

25. आज मेरी बगियाँ मे...

आज मेरी बगियाँ मे, मैं ने दो अंखियाँ देखी...
एक में बिराजत कुन्जबिहारी
दूसरी में रासेश्वरी मुसकाती...।(2) आज...

इक में बाँसुरी की धून रमत है...
दूसरी में मोर पंख नाचत है...।(2) आज...
इक में परम प्रेम बहता है, दूसरी से समरपन बहता है...।(2) आज...

कहत ऋता, दोऊ मेरे हिय में बस जाएँ...
जग हयाती का स्वर्ग हो जावे...।(2) आज...

26. रागों का सागर...

तू रागों का सागर है...(2)
तेरी इक धून के प्यासे है...।(2) तू रागों का...

मौका जो दिया तुने...(2)
चले आयेंगे हम मधुबन में...।(2) तू रागों का...

वियोगी मन का पागल पंछी...
मौन में हो गया बेकरार...
आना है जो हमें तेरी ही शरन...(2)
अब तू ही तो कीरपा कर दें...।(2) तू रागों का...

इधर ही तो मोत आन पड़ी...(2)
उधर ही पाना है प्रेम पराग...(2)
प्रभो! तू ही कीरपा कर दे...(2)
पहुँच जाये हम तेरी ही शरन...।(2) तू रागों का...

कोई क्या जाने और क्या समझे...(2)
ऋता की ये गहरी उलझन...(2)
बस सान बान और आन तू है श्याम...(2)
बस अब तो किरपा कर दे...।(2) तू रागों का...

27. गोकुल पधारो श्याम...

गोकुल पधारो मेरे श्याम...(2)
नंद भवन सुना सुना धाम...(2)

जब से गये तुम कैसी बितत हम पर...
क्या तुम जानो... राधा के क्हान,
रोज़ रोज़ दु:ख देवत है, नज़ारा निकुन्ज का...(2) नंद भवन...

क्या तुम जानो..यशोदा के लाल?...(2)
कल कल नाद कालिन्दी का... मौन होके बहत है... क्या तुम जानो...
क्या बितत है सुबह शाम...।(2) गोकुल पधारो...

कहे ऋतेश्वरी सुनो मेरे बन्धु!
मग जोवत वृन्दावन धाम...(2)
बंसीवट भी विरह वारि से... व्याकुल पग धोवन को...।(2) नंद भवन...

28. अकेली हूँ...

अकेली हूँ धून सुना जाओं...(2) जहॉ भी हो तशरिफ लाओ...
कहॉ खो गये हो तशरिफ़ सामने लाओ...।(2) अकेली हूँ...

तुम्हे दिल ढूँढता है, आँखें भी तरसती है...(2)
ना कोई आशा ना कोई सुझाव है...।(2) अकेली हूँ...

तन्हाँ का ये तम्बूर ना कोई सूर बजाता है...(2)
ना रागी ना बैरागी हूँ...।(2) अकेली हूँ...

ऋते! बता जाओ क्या करूँ...(2) दया करो प्रभु! क्या करुँ?(2)
धून सुना जाओ, महरबाँ करो...।(2) अकेली हूँ...

29. भँवरे डोले...

भँवरें डोले फूल फूल, डोले भँवरें फूल फूल पर...(2)
आज मेरी बगिया में भँवरें डोले रे...।(2) भँवरें डोले...

चंपा, चमेली, जाई, जुई मगन भई...(2)
पारिजात निकुन्ज का रूप धरे...।(2) आज मेरी...
नवरङ्ग चंपा गोपियों का रूप धरे...(2)
कृष्न फूल कृष्न का रूप धरे...।(2) आज मेरी...

चंद्र किरन गोधन का रूप धरे...(2)
लीला लीला बाँस बंसी का रूप धरे...(2)
मलकन्ती चाँदनी राघा का रूप धरे...।(2) आज मेरी...

ऋते, आनन्द बगिया मुस्कान करे,
ऋताचल बंसी वट का रूपधरे...।(2) आज मेरी...

30. गुरु प्रार्थना...

गुरुजी तुम सूरज हम इसकी किरन...
ता में अङग अङग प्रकाशत...।(2) गुरुजी...

गुरुजी! तुम चँदा, हम इसकी किरन...
ता में अङग अङग शीतल मेरा...।(2) गुरुजी...

गुरुजी! तुम ब्रहम कमल हो... इसका परिमल हम हैं...
जा में निर्लेप भाव जमाता है...।(2) गुरुजी...

गुरुजी! तुम प्रभु हमारे... ऋता के जीवन सहारे...
रोमरोम पुलकित बहारें...।(2) गुरुजी...

31. याद आवे...

राधा सीली सीली... रातों में...
भीगी भीगी अँखियों तुम्हे याद करूँ...।(2) राधा सीली...

वैकुन्ठ नहीं लागे प्यारा प्यारा...(2)
गोकुल लागे मीठा मीठा न्यारा न्यारा...।(2) राधा सीली...

मथुरा की गलियाँ गलियाँ याद आवे...(2)
छाछ पे नाचन की याद आवे...(2)
कंकर फेंक लीला याद आवे...।(2) राधा सीली...

रास की लीला, तेरी धूनें याद आवे...(2)
झाँझर की रुमझुम याद आवे...(2)
यमुना और मधुवन की याद आवे...। (2) राधा सीली...

ऋते! यशोदा तेरी ममता याद आवे...(2)
नंदबाबा का प्यार दुलार याद आवे...(२)
राधे! किसे कहूँ मेरी व्यथा की कथा...।(2) राधा सीली...

32. मोहना...

मोहना! मेरे माखन की मटकी तू फोडना...(2)
तुझे बंसरी दिला दूँ...(2) अरे मोर पंख दिला दूँ...
पर मेरे मख्खन की मटकी तू फोड़ना...। (2) मोहना...

तुझे गोपियों से छाछ दिला दूँ...(2) और मिसरी भी दिला दूँ...(2)
पर मेरी मटकी तू फोड़ना...। (2) मोहना...

सोने की करधनी पहना दूँ...(2) तेरी पैजनियाँ छमछम बाजे रे...(2)
पर मेरी मटकी तू फोड़ना...।(2) मोहना...

तुझे मैं गिल्ली-दन्डा दिला दूँ...(2)
माथे पे सोने का मुकुट पहना दूँ...(2)
पर मेरी मटकी तू फोड़ना...।(2) मोहना...

33. हे आद्या...!

इक नन्हा सा उर में बोई मैं ने प्रीत...
आम्र कुन्ज बन के फैली कैसी मेरी जीत...!(2) इक नन्हा सा...

आभ अवनी पर नृत्यन्ती रुडी एक कन्या...
वही तो है ऊषा ना कोई सुंदर अन्या...!(2)

खुल गये द्वार सूर और परम के हे तन्या...
भर गया अनन्त नभ खाली न कोई जगह अन्या...!

हृदय हेल छलबल भर दे हे रूपाढ्या...!
कहे ऋते! हे मङगलमयी शक्ति आद्या..!

34. गाओ मन मेरा...

गाओ मन मेरा घीनक घीन घीन...(2)
बजा दे तू बाँसुरियाँ...।(2) गाओ मन मेरा...

बदरा घीर घीर आये...
ऋतु है भीगी भगी...(2)
बजा दे तू मेध मल्हार...।(2) गाओ मन मेरा...

दूर कहीं पपिहरा...
पियु पियु बोले...(2)
मन कोयलिया कूहू कूहू बोले...।(2) गाओ मन मेरा...

झूला झूले सखियाँ...
घर आजा मेरे साँवरा...(2)
बजा दें तू मालकँसी...।(2) गाओ मन मेरा...

सुरिली धूनें सुन खो गई बावरिया...
अनाहत धूनें फूले मेरी छतियाँ... (2)
छूपी बातें आये होठों पर...
घर आजा मेरे बालमा...(2)
बजा दें मधुमात सारङग...(2)
रास रचैया, मुरली धरैया...।(2) गाओ मन मेरा...

35. मीसरी खिलाऊँ...

कान्हा रे कान्हा... तू आजा मेरे लाला...
तुझे मिसरी खिलाऊँ...(2)
कदम की छाँव में झूला झूलाऊँ...।(2) कान्हा रे...

तेरा मनमोहक हास पे...(2)
मैं टकीटकी लगा के देखूँ...।(2) कान्हा रे...

कोकिल कूहूँ कूहूँ जीयरा में बोले...(2)
सारेगम पधनिसा जियरा गाएँ...।(2) कान्हा रे...

नन्हीं नन्हीं पद पैजनियाँ...(2)
बजने लगी पर ना बाजे ये बाँसुरी...।(2) कान्हा रे...

ऋते! ग्वाल बाल चमकंत लागे...(2)
पर, सखी बाँसुरी ना बाजी रे...।(2) कान्हा रे...

36. चलते चलते...

चलते चलते...(2) मुझे गुरुवर मिल गये हैं...
हरि राह चलते चलते... मुझे गुरुवर मिल गये हैं...

जो पिड़ा कही गई ना मूँह से...
वो सरजन मेरा कह रहा हैं.. यह प्रेम उमड़ रहा है...(2)
हर धड़कन के साथ साथ... मुझे गुरुवर...

आश है इन्तझार आखिर... चिंन्ता भी मिट गई हैं...
ये बिहाग गा रहा है... मेरे साथ गाते गाते...।(2) मुझे गुरुवर...

गुरुकिरपा फल रही है... साधन करते करते...
बन्ध माया का छूट रहा है, प्रभुनाम जपते जपते...।(2) मुझे गुरुवर...

37. धून संवारी...

आज मैंने धून संवारी साँवरे...(2)
राग विराग हो गये बावरें...(2)
ऐसी अलौकिक धून संवारी साँवरे...।(2) आज मैंने...

मन कोकिल कूहू कूहू बोले...(2)
हिय पपिहरा 'पियु पियु' डोले...(2)
ऐसी अनोखी धून सँवारी साँवरे...।(2) आज मैंने...

पारिजात सुगन्ध फौवार छोडे...(2)
वैजयन्ती मस्त बन डोले...(2)
ऐसी अलौकिक धून संवारी साँवरे...।(2) आज मैंने...

बँसीवट घट घट नृत्य करे...(2)
कदम निनाद लय ताल पूरे...(2)
ऐसी अनोखी धून सँवारी साँवरे...।(2) आज मैंने...

निकुन्ज में रास स..रस हुवो...(2)
ऋता की मटकी में हरख फूलो...(2)
ऐसी दिव्य धून संवारी साँवरे...।(2) आज मैंने...

38. बनवारी...

बनवारी हम तो लूट गये तेरे प्यार में...(2)
जाने तुम कब समझोंगे?...।(2) बनवारी...

चन्दा भी प्यारा सूरज भी प्यारा...(2)
सब से न्यारा बँसी बजैया...।(2) बनवारी...

कुन्ज देखा निकुन्ज देखा...(2)
देख्यो मधुवन प्यारो प्यारो...।(2) बनवारी...

बँसी पियारी किरीट पियारो...(2)
सब से प्यारो है स्मित तेरो...।(2) बनवारी...

बली बली जाऊँ वारी वारी जाऊँ...(2)
ऋते तेरे ही चरण में शरण हूँ...।(2) बनवारी...

39. ओ मनवा...

ओ मनवा! माया मधु बिंदु का आज बन्धन तोड़ दे...
लग जा हरि चरन प्रीत में तू लग जा...।(2)

जो तू चाहता वो भ्रमझाल को छोड़ दे...
ये तेरा रूप रङ्ग एक दिन गंवाना है...
तो काहे को भ्रमणा में रमण करता है?(2)
अब तो तू लग जा...।(2)

कहे ऋतेश्वरी, हरि शरण लीला धाम है,
वही तो सुख धाम है उसे छोड़ कर कहीं और मत जा...।(2)
अब तो तू लग जा...।

40. प्रभु की शरण में...

आजा मनवा प्रभु की शरण में...(2)
फिर ये मानव देह मिले ना मिले...।(2) आजा...

कर ले प्रभु का सिमरण हे मनवा...(2)
फिर ये जनम मिले ना मिले...।(2) आजा...

तुझ को मिलेगा शरण में ही सच्चा जीवन...(2)
काहे करे तू तन मन धन को बरबाद...।(2) आजा...

जपी ले नाम कर ले सेवा प्रभु की...(2)
आतम ग्यान कर ले तू हाँसिल...।(2) आजा...

कहे ऋतेश्वरी सुनो मेरे प्यारो...(2)
पल पल घड़ी ये पावन गँवाता है तू...।(2) आजा...

41. दिल रुमझुम करे...

दिल रुमझुम करे... झँकारे...(2)
स्वर गुनगुन करे... रंका...रे...(2)
एक गुन्ज तेरे सूरों की... मेरी बगिया में बरसा...।(2) दिल...

मेरे दिल में उठा उमङ्ग... इसे किस को बताऊँ..!
जो सपन पड़ा उसे कहाँ छुपाऊँ...।(2)
जो रास रचाया तूने सङ्ग मेरे...
जो दिल में लगा वो किसको बताऊँ...।(2) दिल...

ओ मेरे श्याम! तेरी बँसी अङ्ग जलाए...(2)
तेरा ऊँचा है वैकुन्ठ... मैंने पंख नहीं लगवाईं...।(2) दिल...

42. अखिल ब्रह्मांड में...

अखिल ब्रह्मांड में गुरुजी बिराजत...(2)
चेतन की बाँसुरिया बाजत...।(2) अखिल...

जप तप तीरथ ग्यान बतायै के...(2)
अंचला माया का मुख पर डाल के...
प्रगट ब्रह्म रूपे लीला करे...।(2) अखिल...

डमरुं डम डम डम डम बाजत...(2)
गुंजे चहूँओर ॐकार ध्वनि रे...
स्वर गुन्जन लागे अति प्यारुं...।(2) अखिल...

मृदङ्ग बाजे तिरकिट तुम तिरकिट तुम ता ता थै...(2)
नाचत छुम छुम तत् ता थै तत् ता थै...(2)
कान्धा, कान्धा, कान्धा धा- धा धिटक धा...।(2) अखिल...

निसारेसा, निसारेसा सागमधनिसां धनिसां
सारेगमप धनिसां, मपधनिसां...।(2) अखिल...

ओदे रे नादिर धिरता नातिर तिरता ओदेरे
नाधिरता नातिर तिरता
धीन धीन धीन तनने....धा...। अखिल...

43. धन्य भाग...

धन्य भाग निकुन्ज में जनम पायो...(2)
अधर कमल पर बँसी बजाय के...
रसो वै ब्रह्म सङ्ग बाजे...।(2) धन्य भाग...

रस अनन्ता... हरि रासअनन्ता...(2)
आ...आ... गपध सां... निध पमगरे गप... ध...
सा सा ग पमगरे...(२)
रस अनन्ता हरिरास अनन्ता कैसे पावै, कोई हरि रूप दरशन...(2)
हरिरस खूब पिलाया मुझको...।(2) धन्य भाग...

घट में गुन्जे... रास निरन्तर...(2)
वारी वारी जाऊँ मुरलीधर चरण को...(2)
कहे ऋतेश्वरी...(3)
मुझ को रख लो, श्याम! चरनन में...।(2) धन्य भाग...

44. मन की बिना...

मन की बिना मतवाली बाजे...(2)
सुरता रानी सुनके गगन में राजे रे...।(2) मन की बिना...

बिँदिया लगायके आनन्द ज्योत जलाय के...(2)
अपने हरि मिलन को चली...।(2) मन की बिना...

भँवर गूफा में करत मेघा गरजन...(2)
वो मधुरस पीके छुम छुम नाचत रे...।(2) मन की बिना...

छम छम छुमछुम नूपुर बाजत री...(2)
धीन् ताना धीन् ताना गगन गाजत री...।(2) मन की बिना...

उमड़ घुमड़ छाई कारी कारी बदरियाँ...(2)
रीमझीम झँकारे ऋता थै थै नाचत री...।(2) मन की बिना...

45. अवतर्या राधा...

रेलाणी बँसी सूर धारा, अवतर्या राधा...(2)
ओतप्रोत हुए सूर, कोई न रहा आधा...।(2) रेलाणी...

ऐसे तो गोपाल, अकेला था यादव...(2)
सद्नसीब, मिल गई राधा तो हो गया माधव...!(2) रेलाणी...

हरेक मटकी खुशबू सङग गाती...(2)
कंकर पीछे से को' ईशारे दूध से नाती...।(2) रेलाणी...

गोकुल में फ़सल प्रेम की बोई मद मस्त...(2)
चौदह ब्रह्माँड का गोकुल ने पाया समस्त..!!(2) रेलाणी...

निनाद कुरुक्षेत्रे रव्यो अरे अलमस्त...(2)
ऋते! उषा अधर्म की कैसी हुई परास्त...।(2) रेलाणी...

46. अणु अणु में...

हे अणु अणु में रमते राम, जगत् के श्याम...
हे अंन्तरयामि! मैं तुझसे क्या माँगू..?

बँसीवट यमुनातट दे के बँसी
तुम मुस्कुरा कर चल दिये...(2) जगत् के...

ये मेरी अरजी ओ मेरे हरिजी!
कृपया पहुँचे वैकुन्ठ धाम...।(2) जगत् के...

जुदाई की परिवेदना आँसु बहावे...
तन मन धन लूटायके...।(2) जगत् के...

स्विकारो मेरे प्यारे! अपरिहार्य मेरे दिल का...
विशेष वियोगी अर्ध्य...।(2) जगत् के...

47. गुरुदेव की किरपा...

मिलती रही गुरुदेव की किरपा हरघड़ी...(2)
ए मनवा! जाग के देख तू सब धड़ी...।(2) गुरुदेव...

छाँड, द्वेष की छडी ले प्रेम की मनहर लड़ी...(2)
फ़सल महेकेगी भक्ति की हरघड़ी...।(2) गुरुदेव...

फेंक गठरी राग की, फिकर ना कोई घड़ी...(2)
एक म्यान दो तलवार रहे कैसे मंन घड़ी...।(2) गुरुदेव...

खुलेंगी ज्ञान कडी, जग में है सब से बड़ी...(2)
ऋते! तो ना राधा ना मीरा बस खिली प्रेम कली...।(2) गुरुदेव...

ऋते! जागीर सास की सदा श्याम चरण रही...(2)
क्यों रहे जनम जनम का कारण कभी...?(2) गुरुदेव...

48. देवताओं...!

देवताओं फूल बरसाओ... मेरे गुरु देव आये हैं...(2)
हवाओं! विंझणो विंझो... मेरे गुरु देव आये हैं...(२)

ओ बादल बरसो जी भर के...(2) उतर आ जा ओ लालिमा...(2)
बिजलियाँ तेज़ चमकाओं... मेरे गुरु देव आये हैं...(२)

दिशाओं दूरदूर सुगन्ध फैलाओं...
तेज़ पुन्ज की चादर बिछाओ... मेरे गुरुदेव आये है...(२)

सँवर जाएँ मेरी जीवन बगिया... खिल जाएँ ग्यान फुलवारी...
ऐसी आशिष बरसाओ...
मेरे गुरुदेव आये हैं...ऋते! मेरे गुरु देव आये हैं...

49. संत कृपा...

संत कृपा ही सुष्मा है...
आनन्द मौज सवारी है...
बन्दगी और कुछ भी नही...
प्रभु प्रेम की मस्ती है...।(2) संत कृपा...

दु:खों को तो आना हैं...
आ कर चले जाना हैं...
बादल है ये दो पल का
आ कर चले जाना है...
कृपा का तो मतलब है...
आनन्द ही आनन्द है... बंन्दगी और कुछ भी...

शिष्य है प्यार नदियाँ का...
गुरुजी हमरा किनारा है...
क्हान हमरा सहारा है...
हम ऊन की शरण में हैं...
छाया का जो मतलब है...
आनन्द ही आनन्द है... बंदगी और कुछ भी...

करुणा ही माया छुडाती है...
कृपा गुरुदेव की
जनम जनम से पाई है...
इस ही जनम में आतम को पाना है...
बंदगी और कुछ भी नहीं...
गुरु प्रेम की दिवानगी है...

50. कृपा सिन्धु...

कृपा सिन्धु बरसे...(3)
लाल गुलाबी श्वेत श्यामल
रङ्ग चिदानन्द में चमके...।(2) कृपा सिन्धु...

मन आँगन तन उपवन उपवन पर...
करती कृपा अम्रीत बरषा...(2)
नयन ज्योति प्रगटे...।(2) कृपा सिन्धु...

पलकों ने पालव फैलाया...कर दी तूने शीतल छाया...(2)
मधुरस धूंट धूंट पीये...।(2) कृपा सिन्धु...

सुरता रानी सजना निरती से मिले...(2)
शुभ मङ्गल अवसर पाया...।(2) कृपा सिन्धु...

ऋता ! दिल में मधुराद्वैत प्रगटे...(2)
आनन्द आनन्द हैये हुल्लसे...।(2) कृपा सिन्धु...

51. हे गोपाल...

हे गोपाल... हे गोपाल...(3)
कब ही सुनोगे मेरी पुकार...।(2) हे गोपाल...

बंसी सुनती, सुदर्शन सुनता...(2)
पांचजन्य भी सुनता है...पर तू ही नहीं सुनता...।(2) हे गोपाल...

यमुना सुनती, कदंब सुनता...(2)
गोकुल की रजकण सुनती...पर तू कब सुनेगा...?(2) हे गोपाल...

कहत ऋतेश्वरी हे... गोविंदा!
हे राधा के वल्लभ...तू कब ही सुनेगा...।(२) हे गोपाल...

52. ये तप और...

ये तप और गुरु की कृपाओं के सायें...
मुझे मोह लेते... ये बगिया के फूलों...
ये तप और गुरु की कृपाओं के सायें...।

बिजुरी ली स्फुर्ति मन को लुभावे...(2)
कृपा आज प्रभु की बरसने लगी है...(2)
बहोत उजले उजले ये दिन और रातें...(2) मुझे...

लिपटें थे ग्रंथों की अजीबो गरीबी...(2)
ये पल पल अन्धेरा कहां है उजाला...(2)
बहोत नन्ही नन्ही कृपाओं की राहें...(2) मुझे...

खिलते है दिल कितनी आजादियों से...(2)
बहोत प्यार मिलते है ईन वादियों से...(2)
भक्ति की रंगी रदरिया जो प्यारी...(2) मुझे...

ये तप और गुरु की करुणा के सायें...(2)
ये तप और प्रभु की करुणा के सायें...(2) मुझे...

53. खाली खाली तन तम्बूर...

खाली खाली...(2) पडा है तन का तम्बूर...(2)
गाओ गाओ...(2) तुम बनके नारद की बिना...।(2) खाली खाली...

ओ मेरी सहचरी, ओ मेरी भागवंती...(2)
रास...(2) रमीए बनके गोपी...।(2)
गाओ गाओ...(2) तुम बनके नारद की बिना...।(2) खाली खाली...

ओ, ऋता के साधको...!(2)
गाओ गाओ तुम बनके बासंती बयारा...।(2) खाली खाली...

54. महायोग के दाता...

महायोग के दाता सद्‌गुरुदेव...(2)
विश्वविधाता सद्‌गुरु सेव...।(2)

दृष्टि, संकल्प, मंत्र से जगाते शक्तिरेव...(2)
सो विश्वनियंता सद्‌गुरु सेव...।(2)

वेदामयी, वर्णमयी, कलावती, क्रियावती...(2)
उर्ध्वगति देती है, ऐसे सद्‌गुरु सेव...।(2)

भुक्ति, मुक्ति के कारक सद्‌गुरुदेव...(2)
विश्वपालक पिता तू सद्‌गुरु सेव...।(2)

स्वयं सिद्ध साधन के दाता...(2)
शिर काजे है अन्मोल, सद्‌गुरु सेव...।(2)

करते है सद्‌गुरु काम तमाम...(2)
होता ऋता का जग में बहुनाम...।(2)

55. गाती हो मेरी जिन्दगी...

गाती हो मेरी जिन्दगी... हो तुम बसंत की बहार बनके...।(2)

तेरी मेरी जिन्दगी में एक ही तो जाम है...
जाम है पर, खाली खाली है...।
कहीं टूट ना जाये, ओ... मेरे साथिया...।(2) गाती है...

तेरे मेरे दिल में एक धून बजती है...
वो धून भी न छूट जाये, ओ... मेरे साथिया...।(2) गाती है...

तेरे मेरे दिलरुबा के एक ही तार है...
वो तार भी न टूट जाये... ओ... मेरे साथिया...।(2) गाती है...

56. गुरुजी तुम गंगा...

गुरुजी! तुम गंगा पतित पावनी हो...(2)
ध्यान भजन से जो कोई डुबकी लगावे,
उसीका बेड़ा पार हो जावे...।(2) गुरुजी...

गुरुजी! तुम शीतल चन्दा हो...(2)
हम सोई हुई कमलिनी है,
तुमरी कृपा से मन खिल खिल जावे...।(2) गुरुजी...

गुरुजी! हमरा मन चंगा है...(2)
प्रेम अमी से भर भर जाता है,
आनन्द कन्द बगिया सुगन्ध से भर जावे...।(2) गुरुजी...

गुरुजी! तुम ज्ञान का सूरज हो...(2)
हम भमरिया कुआ है,
ज्ञानप्रकाश से अन्दरुनी उजियारा हो जावे...।(2) गुरुजी...

गुरुजी! शरण तुम्हारी भवसागर पार कराती...(2)
ऋता को शरण है तुम्हारी,
अब की बार मोहे पार करो...।(2) गुरुजी...

57. गुरुजी आशिष देना...

हमको गुरुदेव आशिष देना... मन साधन करे...(2)
दूसरों को देखने से पहले खुद को देख ले...
मन से बचते रहे, सच क दम भरे...।(2) हमको...

मुश्किलें पडे जो हम पर... इतना करो हे गुरुदेव की...
साथ देके हमें सच की राह दिखा देना...
खुद पे नाज रहे, सत पंथ को चले...
दूसरों को देखने से पहले खुद को देख ले...।(2) हमको...

वेद ज्ञान अपने दिल में साफ उतरे... और आशिष हम पर रहे...
घट घट में आप ही आप है...
संसार जंजाल से मुक्ति करे... मन साधन करे...
दूसरों को देखने से पहले खुद को देख ले...।(2) हमको...

58. सही नमाज है...

पद पैसा प्रतिष्ठा बनाने की मशहूर दासताँ है,
पर क्यों भूले? आत्मशक्ति ही दिव्य गुलिस्ताँ है।

कभी आपबल तप बाहुबल देखा बनते मज़ाक है,
जिन्दगी मबलख रंग मेला की रंगीन छपाक है।

सुखदुःख की गगरी में अकुलाती ये रजाक है,
हजारों मन धूल धोने के बाद नीकली कण सोने की है।

किनारा संग शिर सन्धान हयाती की ही आवाज है,
चमन में चुम्बन तितलियों के लय का ये रियाज है।

ऋता! रहेना बहना खुद्दारी से ये मेरा रियाज है,
पल पल तो क्या? नींद में भी ना छूटे, सही नमाज है।

59. आज सूरज...

आज सूरज निकल आया मेरे दिल के कोने में...(2)
देखा तो मेरी बगिया में वो कली...(2)
धीरे से मुस्कुरा कर खिली...।(2) आज...

धर्म संस्थापना के लिए...(2)
मैंने चढाई ये नाजुक बली...।(2) आज...

भले हो पास मेरे सुदर्शन...(2)
पर सु-दर्शन विधाता का सही...।(2) आज...

भले हो पास मेरे पांचजन्य...(2)
पर प्रपत्ति में उसने सब सही...।(2) आज...

ऋता! भले मैंने गाई गीता रणसंग्राम में...(2)
पर प्रेम के गीत-संगीत में वो चढी...।(2) आज...

60. गा रे मुरलिया...

गा.. रे मुरलिया गा... रे...(2) आज मधुकँस गा... रे...(2)

सुमधुर मनोहरी मालकँस है...(2)
पर मेरी चाहत है चारुकेशी...।(2) गा.. रे मुरलिया...

सुहावन मधुवन मनभावन है...(2)
पर मेरी चाहत है रासेश्वरी...।(2) गा.. रे मुरलिया...

विरह वैकुठ में प्रौढ हुआ है...(2)
अरे, मेरी चाहत है वृषभान दुलारी...।(2) गा.. रे मुरलिया...

क्रिपालु स्वामी है ऋता का...(2)
कब हूँ मिलेगी मेरी पियारी...।(2) गा.. रे मुरलिया...

61. माधव कैसे भूलेंगे...

तेरी बंसी... मेरी धूने...(2) और ये वृन्दावन की गलियाँ...(2)
कैसे भूलेंगे माधव... कैसे भूलेंगे...।(2) मेरी...

तेरी कांकरी... मेरी मटुकी...(2) दोनों की मधुरी प्रीत सांवरिया...(2)
कैसे भूलेंगे माधव... कैसे भूलेंगे...।(2) मेरी...

ये बंसीवट... ये जमुना तट...(2)
तेरा चिरहरण, यमुना की लडियाँ...(2)
कैसे भूलेंगे माधव... कैसे भूलेंगे...।(2) मेरी...

कहती है ऋता... वो बातियाँ...(2) चार युगों के हो रसिया...(2)
कैसे भूलेंगे माधव... कैसे भूलेंगे...।(2) मेरी...

तेरी बंसी... मेरी प्रीत... सखियाँ...(2)
कैसे भूलेंगे माधव... कैसे भूलेंगे...।(2) मेरी...

62. जाऊँ तो जाऊँ किस धाम...

जाऊँ तो जाऊँ किस धाम...?
ना भूल पाता हूँ राधा नाम...। जाऊँ...

साँसों की जागीर छूट गई गोकुलधाम...
झूर झूर पीले पड गये मेरे गाल...। जाऊँ...

किसे कहूँ मेरी ये असहय पीर...?
कसक उठती दिल में न रहे धीर...। जाऊँ...

ऋते कैसे धरूँ फिर अवतार...?
प्रेम रूप पे अडती ये नियति किरतार...। जाऊँ...

63. दिल की किताब...

दिल की किताब में लिखा है...(2)
'ढाई अच्छर प्रेम का' नाम है...।(2) दिल की...

चन्दा सूरज सितारों में गोरी...(2)
पर प्रेम की चाँदनी सब से गोरी है...।(2) दिल की...

स्पन्दन उमंग दिल में हिल्लोरती है...(2)
मधुवन निकुंज की यादें पनपती है...।(2) दिल की...

अधर बंसी बनके गुनगुनाती है...(2)
आंसु ही बनके राधा रुलाती है...।(2) दिल की...

ऋता वल्लभ! जान में जान गुंजती है...(2)
यादें महारास की तब दमकती है...।(2) दिल की...

64. वीर...

तू वीर, पर महावीर बन...!
प्रणय को घूंट ले
श्वास की खरल पर...।

तू और मैं नहीं पर...
हम 'एक' वन...।

सूर शोध नहीं...
ईसकी स्थाई बन...
हृदय अखिलाई से...
तारा मैत्री बन...।

65. धून...

धून है यह मस्तानी... राग है भूपाली...(2)
कौन जाने, है यह किसकी कहानी?

शमा है पर दिवानी... है हर नजर नशीली...(2)
कौन जाने, है यह किसकी कहानी?

सूर है पर सुहानी... नूर है पर नूरानी...(2)
कौन जाने, है यह किसकी कहानी?

मैं जानू रसीली, आह्लादिनी धून... प्रीत है पुरानी...(2)
कौन जाने, है यह किसकी कहानी?

अलख है यह सुराही... ऋता पर गुलाबी...
राधा-किशन की निशानी...(2)
कौन जाने, है यह किसकी कहानी?

66. धून के संग...

धून के संग धून बाजे रे...(2)
आ... धून के संग धून बाजे रे...।

दिल में कसक उठी प्यारी प्यारी रे...(2)
नयन में छवी न्यारी न्यारी रे...।(2) धून के...

उस चाभी को वारी वारी जाऊँ...(2)
बली बली जाऊँ बनवारी को...।(2) धून के...

ऋते, दिल में कसक उठी प्यारी प्यारी...(2)
नयन में छवी न्यारी न्यारी रे...।(2) धून के...

67. तेरी धूनें सुनते...

तेरी धूनें सुनते सुनते...हम तो हो गये दिवाने...।(2)
तुम ले गये हो अपने संग...(2)
जियरा भी हमरा...।(2) तेरी धूनें...

कुछ नजर नहीं आता...(2)
घरबार भी छोड दिया...।(2) तेरी धूनें...

तुम ले गये हो अपने संग...(2)
प्राण भी हमारे...।(2) तेरी धूनें...

ऋता की पुकार सुनो...(2)
अब धडकन भी तेज हो गई...।(2) तेरी धूनें...

जो गोलोक न छोड सको...(2)
तो मुजे बुला लो अपने संग...।(2) तेरी धूनें...

68. छू लेती...

छू लेती हूँ जब बंसी को...(2)
मौन भी वो गीत सुनाती है...।(2) छू लेती...

यादें है ये अलबेली...(2)
डगर भी मेरी अल्लाबेली...।(2) छू लेती...

सुफियाना इश्क की बाँसुरी...(2)
बजती है मेरी गगन गुफा में...।(2) छू लेती...

ऋता! अपना गल भूली...(2)
दर दर गाती वो अपनी कहानी...।(2) छू लेती...

69. इठलाती...

इठलाती इठलाती...(2)
कान्हा तेरी निठ्ठल बंसी इठलाती...(2)

कोई रोके नहीं कोई टोके नहीं...(2)
उस पार जाने को बलखाती...।(2) कान्हा तेरी...
पागल औ' जोगन बनके...
उस पार जाके लडखडाती...।(2) कान्हा तेरी...

राधा बनके औ' क्रिष्न बनके...(2)
उस पार जाके मदमाती...।(2) कान्हा तेरी...
अवनि औ' आकाश बनके...(2)
उस पार ऋता विभु में मिल जाती...।(2) कान्हा तेरी...

70. अगर मेरे आँसू...

अगर मेरे आँसू शबनम है...
तो मुझे तेरी शर्गों के मोती दे दे...।(2)

जनम जनम तेरे नाम की...
माला जप रही हूँ...।(2) अगर मेरे...

ना सुख है, ना दुःख है...
न कोई चिंता, आनन्द कन्द है...।(2) अगर मेरे...

बस, इक तेरे नाम की...
मस्ती... ही... मस्ती... है...।(2) अगर मेरे...

ना मोह है, ना को' सविशेष है...
खुद में खुदाई झलकती है...।(2) अगर मेरे...

71. जीया तौसे...?

जीया! तौसे कैसे समजाउँ रे...(2)
हो... हो... आई पूनम आई रे...(2)सब रस लाई रे...।

धीनक धीन धीन... तीनक तीन तीन...
ताल की आश है...।(2) जीया तौसे...

ना बजेंगे बंसी की धूनें... वो चान्द सा काना आया नहीं...(2)
राधा रानी भी ना आई रे...
निसागम गरेसा...(2) गमगरेसा...।(2) जीया तौसे...

गोकुल में विरह का बादल छाया है... अभी बरखा की आशा से...
गोपी यमुना तीर मग जोहती...
गमनिनिप...(2) पसानिधम...(2)
हो... हो... रास की आश गवाँ...बैठे है हम...।(2) जीया तौसे...

72. मैंने बाली उमर में...

हो... हो... हो... आ... आ... आ... आ...
मैंने बाली उमर में...(2)
पिया प्याला प्रेम का...।(2) हो... मैंने...

मेरी बन्दगी बन गई...(2)
जागीर तेरी...।(2) हो... मैंने...
श्याम सांसों की जागीर...(2)
अनामत है तेरी...।(2) हो... मैंने...

जीवन बाँसुरी मेरी...(2)
गाती है धूनें तेरी...।(2) हो... मैंने...
दुनिया क्या जाने ऋता...!(2)
पागलों की ये मस्ती...।(2) हो... मैंने...

73. आज खेलन की...

आज खेलन की जीद है हमारी...(2)
जरा सोचो तो सही...
कई युग बीत गये रास बिना...।(2) आज...

अरे, ओ काह्‌ना!
बंसी की धून...छेड दो मस्तानी...(2)
कई युग बीत गये रास बिना...।(2) आज...

तूम परम परमेश हो...(2) प्रकृति तेरी शिवानी है...(2)
कई युग बीत गये रास बिना...।(2) आज...

जरा डमरू तो बजा दो...(2) लास्य में मन रमता है...(2)
ऋते! युग बीत गये रास बिना...।(2) आज...

74. जानु तो जानु...

ना जानु मैं पूजा औ' अर्चना...(2)
बस जानु कि तू है मेरा अपना...।(2)

ना मेरे पास धूप और दीप है...(2)
जानु तो जानु कि हर साँस
मेरा धूप और दीप है...।(2) ना जानु मैं...

ना मेरे पास कोई हार और फूल है...(2)
जानु तो जानु कि हर रातदिन
मेरा हार और फूल है...।(2) ना जानु मैं...

ऋता के पास न को' निवेद है...(2)
जानु तो जानु कि पंचप्राण... मेरा निवेद है...।(2) ना जानु मैं...

75. गाया है प्रेम का नगमा...

गाया है मैंने प्रेम का नगमा...
गाया है... इक प्रेम का नगमा...।(2) गाया है मैंने...

ये तो प्रेम का स्वरणिम गहना है...(2)
पहनाया कानजी को प्रेम का नगमा...।(2) गाया है मैंने...

नाची थी गोपी खुशी... पहन के गहना...(2)
गाया है मैंने इक प्रेम का नगमा...।(2) गाया है मैंने...

नंदनंदन के हास का ये गहना है...(2)
ऋता के जीवन का नगमा है...।(2) गाया है मैंने...

ये है प्रेम नगमा अणु अणु में गुंजता...(2)
दिन दिन द्विगुन होके बढता है नगमा...।(2) गाया है मैंने...

76. गुंज उठी...

एक गुंज उठी...(2) मेरी गगन गुफा में...।(2)
देखा तो बैठे थे बनमाली...।(2) एक गुंज...

जहाँ राग भी नहीं, विराग भी नहीं...(2)
बस आनंद की लहर लहर है...।(2) एक गुंज...

गुरुदेव की आशिष है...(2) दिन दिन वर्षा होती है...(2)
बस आनंद की लहर लहर है...।(2) एक गुंज...

जहाँ स्वर्ग नहीं है...(2) जहाँ पाताल भी नहीं हैं...(2)
बस आनंद की लहर लहर है...।(2) एक गुंज...

जहाँ मैं भी नहीं हूँ...(2) जहाँ आराध भी नहीं है...(2)
बस आनंद की लहर लहर है...।(2) एक गुंज...

77. चैन ले गयो जी...

चैन ले गयो जी मोरा सांवरिया...(2)

कैसे खेलूँ होरी सखियाँ...(2)
जियरा हो गया है बावरिया...।(2) चैन...

धीनक धीनक धीन...(2)
नाचूँ कैसे? ना बाजत पैजनियाँ...।(2) चैन...

मौन बनके वो तो...(2)
रुठी है यह बाँसुरिया...।(2) चैन...

रैना भी उड़ चली...(2)
फिझा में वो हर नजरियाँ...।(2) चैन...

ऋते! कैसी है दिल की कसक...?(2)
क्या थी? वो प्रेम की सुरखियाँ...
असल प्रेम की सुरखियाँ...।(2) चैन...

78. साँस ही इश्वर है...

साँस ही इश्वर है...(2)
इश्वर के बिना जीवन सुना सुना...।(2)

साँस तो शिव है...(2)
शिव के बिना जीवन सुना सुना...।(2)

साँस ही सुन्दर है...(2)
सुन्दरता के बिना जीवन सुना सुना...।(2)

साँस ही सत्य है...(2)
सत्य के बिना जीवन सुना सुना...।(2)

साँस ही मंगल है...(2)
मंगलता के बिना जीवन सुना सुना...।(2)
ऋते! जीवन सुना सुना...।(2)

79. मथुरा की बाट चली...

एक भोली भोली मथुरा की बाट चली...(2)
माधव नाम की मटकी शिर पर धरी...।(2) एक भोली...

मलकंती चाले वो तो धीरे धीरे...(2)
मुख से जपंती राधे राधे...।(2) एक भोली...

नकाशी भरी नथुनी उसकी...(2)
वो झूमती हरि हरि बोले...।(2) एक भोली...

मन पिचकारी रंगभरी...(2)
नौका उमंग की भरी रे भरी...।(2) एक भोली...

ना रही छाया कंस की कारी कारी...(2)
माखन मिसरी बहोत प्यारी प्यारी...।(2) एक भोली...

ऋते! दु:ख भरे दिन बीत गये...(2)
आनन्द कन्द से सब राजी राजी...।(2) एक भोली...

80. बाग की खुशबू...

बाग की खुशबू रहती है...(2)
बागबान बदलते रहते है...।(2)

भक्ति की खुशबू रहती है...(2)
इबादत बदलती रहती है... ।(2)

जो मरजिवा है, वो डूब उड़ी लगाते है...(2)
क्या डर है ये मौत से
मोती तो लाते रहते है...।(2) बाग की...

जो प्रभु प्रेमी है, आठो प्रहर मस्त रहते है...(2)
जो दम्भ के दाम्भिक है,
दम्भ बदलते रहते है...।(2) बाग की...

इन्सान की खुशबू रहती है...(2)
इन्सान बदलते रहते है...(2)
ये जग चन्द दिनों का मेला,
कुछ ले चलिए, कुछ दे चलिए...।(2) बाग की...

दो दिन की हकूमत रहती है...
सुलतान बदलते रहते है...(2)
ऋता, ऐसे किस्मत बदलती रहती है...।(2) बाग की...

Maa Ruteshwari

Born in 13th December 1950,

Village : Pipali, Dist: Gir Somnath, Gujarat, Bharat.

શ્રી મા ઋતેશ્વરીનાં અન્ય પ્રકાશનો

૧. કુંડલિનીયોગ અને અંતર્યાત્રા
૨. વહેવાને મારગ કરીએ (ગુજરાતી કાવ્યસંગ્રહ)
૩. પંચમ યુગ પ્રેમનો (ગુજરાતી કાવ્યસંગ્રહ)
૪. મધુરાદ્વૈત (ગુજરાતી કાવ્યસંગ્રહ) સચિત્ર
૫. Madhuradwaita (Free English Version)
૬. The Spring (An Autobiography)
૭. मधुरांजलि (हिन्दी काव्यसंग्रह)
૮. હાઈકુ શતકમ્ (હાઈકુસંગ્રહ)
૯. સિદ્ધયોગવાણી (ગુજરાતી)
૧૦. મારા સંતર્પક અનુભવો (ગુજરાતી)
૧૧. ટૂંકી વાર્તાસંગ્રહ (ગુજરાતી)
૧૨. પ્રકીર્ણ (ગુજરાતી)
૧૩. બીજક (ગુજરાતી ભાષાંતર)
૧૪. હયાતીનું હરિદ્વાર(ગુજરાતી કાવ્યસંગ્રહ)
૧૫. કૃષ્ણીય અંતર્વેદના(ગુજરાતી કાવ્યસંગ્રહ) સચિત્ર
૧૬. બ્રહ્મપુત્રાઃ (ગુજરાતી નવલકથા) (આધ્યાત્મિક)
૧૭. ब्रह्मपुत्राः (हिन्दी भाषांतर) (आध्यात्मिक)
૧૮. Brahamputraha (English Version) (Spiritual)
૧૯. Serpent Power (Kundalini) and inner Journey (ebook - Amazon - English Version of Brahamputraha)
૨૦. પરમ પ્રેમ એ જ પરમાત્મા (આત્મકથા)

Shree Maa Ruteshwari Nikunj Ashram

Samana Road, Opp, Dhorivav, Near Madhav Petrol Pump,
Dadia 361012, Dist : Jamnagar, Bharat
Mo No : + 91 94264 53953
Email : - maruteshwari.mahayog@gmail.com